

ISBN 978-81-7450-898-0 (東西 年) 978-81-7450-885-0

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930 **प्नर्मद्रण** : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालबीय, राधिका मेनन, शालिनी सर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका विशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक - लतिका गुप्ता

चित्रांकन - कनक शशि

सन्जा तथा आवरण - निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर - अर्चना गुप्ता, अंशुल गुप्ता, साँमा पाल

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर वसुधा कामध, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रोद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर के, के, वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रार्थिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंजूला माधुर, अध्यक्ष, रीडिंग डंवलैपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

ओ अशोक बाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपित, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ्रेसर फरीदा, अब्दुल्ला, खान, विभागाध्यक्ष, शैक्तिक अध्ययन विभाग, जामिका मिलिया इस्लामिका, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुक्षी नुबहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जवपुर।

80 जी एस एम. पंपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में म्यांचव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण चरिषद्, हो अर्थावन्द मार्ग, नई दिल्ली 116016 द्वारा प्रकाशित तथा पंक्रम प्रिटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मधुर 281064 द्वारा मुहित। बरखा क्रीमक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए हैं। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना हैं। बरखा की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। बरखा बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियाँ वैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। बरखा पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। बरखा से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक बरखा को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकारक भी पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकारन के किसी चार को छापना रूपा इलेक्ट्रानिको, मंत्रीनी, फोटोप्रतिलिप, रिकार्डिंग अथना किसी अन्य बिचि हो पुन: प्रयोग पर्धात हुता उसका संबंदण अथना प्रस्तप्य वर्षित है।

एए.सी.ई.आए.टी. के प्रकाशन विधान के कार्यालय

- म्न.सी.ई.साट.टी. कैंपस, श्री अलीक्ट पार्च, तथी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708
- 168, 160 फीट ग्रंड, डेली एक्सटेंगन, संस्थेकेर, जगतकरी III प्रटेश, जंगतूर 560 085 कोन : 000-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट चलन, वाकपर नवजीवन, अहमदाबाद ३४० ०१४ फोन : 079-27541446
- मी.कल्लु.मी. कैंचल, निकट: धनकर बस स्टीप पंचित्ती, कोलकाता 200 114 कोन 1 033-25530454
- मी.डब्स्यू.मी. कॉम्प्सेक्स, पालीगीव, गुवाहाटी ७४। ((2) क्योन : ०१६१-२६/४४००

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : गो. राजापुनगर मुख्य संपादक : स्वोता उपाल मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिक्ष कुमार मुख्य ज्याचर अधिकारी : गीवम गर्थुस्टी



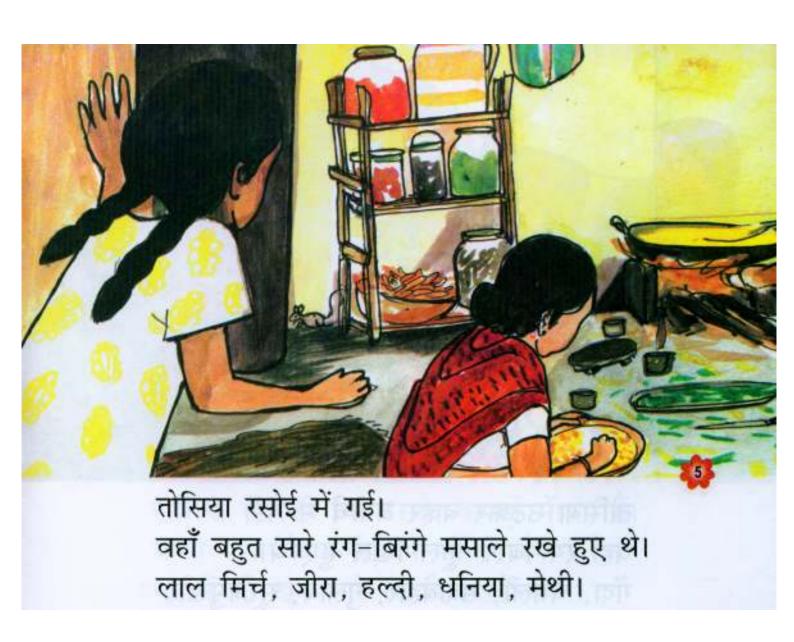




तोसिया को सपना आया कि दुनिया के सारे रंग उड़ गए हैं। कहीं कोई रंग नहीं बचा। उसने देखा कि सब कुछ सफ़ेद-सफ़ेद हो गया है।



तोसिया उठी और सपने को याद करने लगी। वह एकदम से घबरा गई। तोसिया सोचने लगी कि क्या सचमुच रंग गायब हो गए हैं।

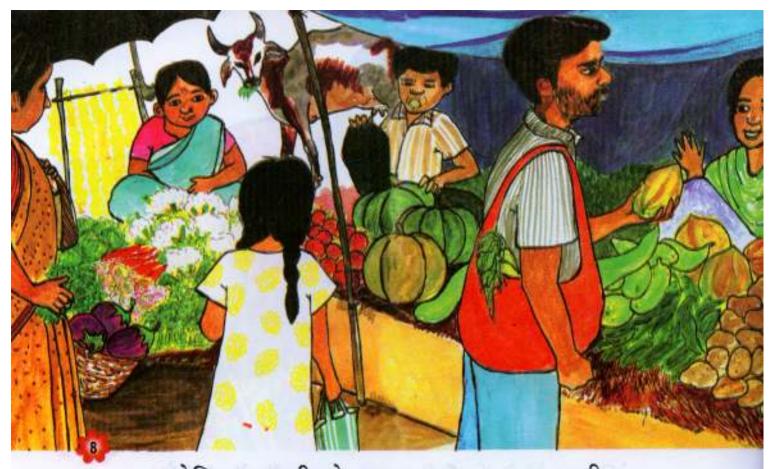




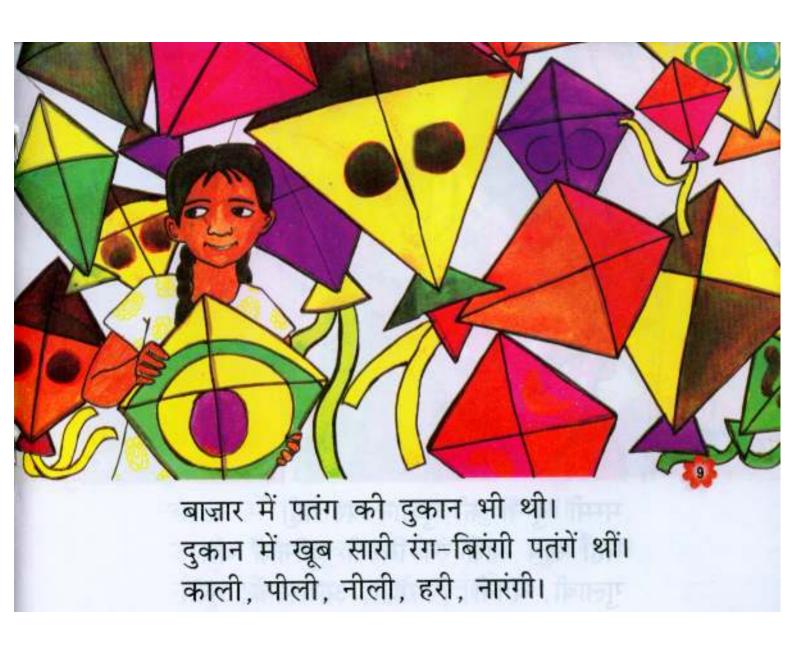
तोसिया उठकर बाहर बगीचे में गई। वहाँ रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। गेंदा, चमेली, सदाबहार, गुलाब, सूरजमुखी।

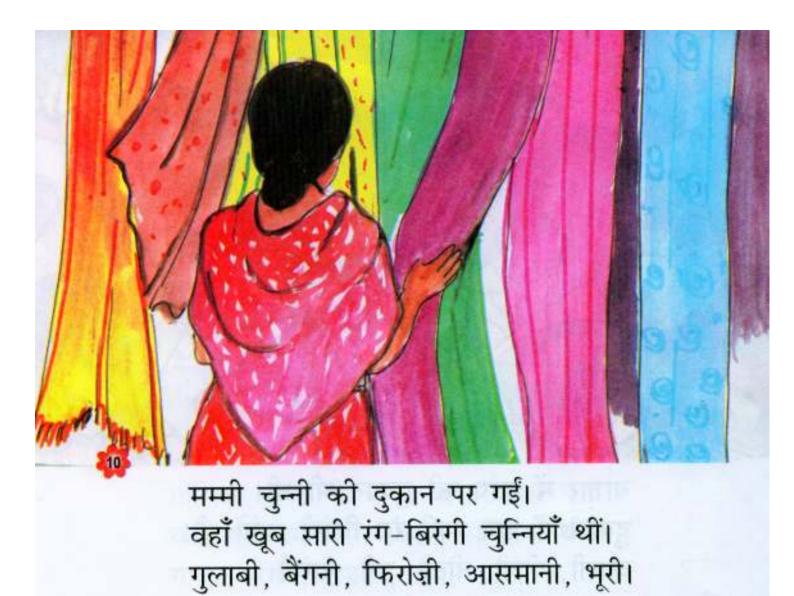


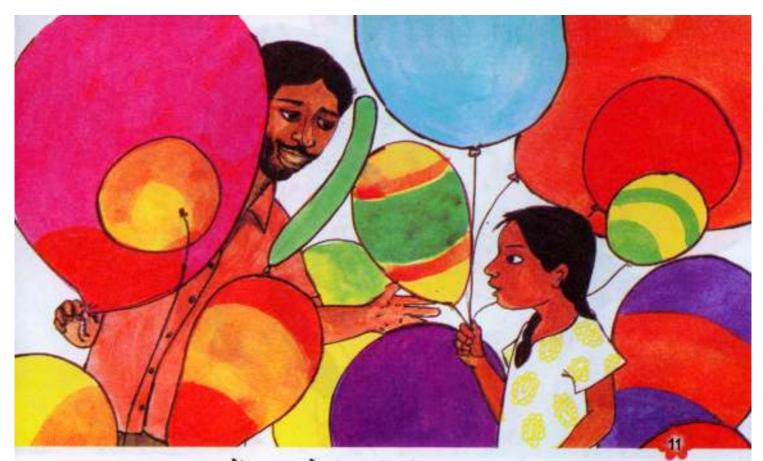
तोसिया ने देखा कि उसके कपड़ों में रंग हैं। मम्मी पापा के कपड़ों में भी रंग हैं। घर में भी खूब सारे रंग दिख रहे थे।



तोसिया मम्मी के साथ बाज़ार चल पड़ी। वहाँ खूब सारी रंग-बिरंगी सब्ज़ियाँ थीं। गाजर, बैंगन, टमाटर, सेम, मटर।







बाज़ार में गुब्बारेवाला खड़ा हुआ था। उसके पास खूब सारे रंग-बिरंगे गुब्बारे थे। नीले, पीले, हरे, लाल, गुलाबी।





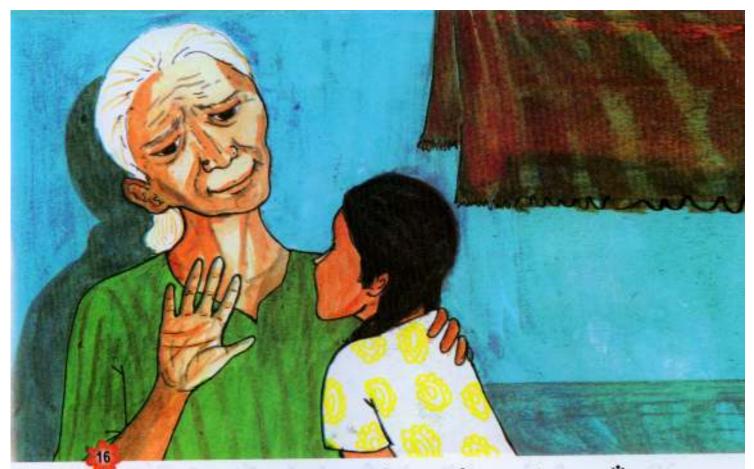
तोसिया घर आकर दोपहर का सो गई। उसने उठकर देखा कि नानी की सहेलियाँ आई हुई हैं। उन सबके बाल सफ़ेद-सफ़ेद हैं।



तोसिया को एक बात याद आई। वह रात को नानी के साथ सोई थी। इसलिए सपने में सब सफ़ेद-सफ़ेद दिखा होगा।



तोसिया नानी के बालों को गौर से देखने लगी। वह नानी के बालों को छू-छूकर देखने लगी। तोसिया सोचने लगी कि नानी के बाल सफ़ेद क्यों हैं।



उसने नानी से पूछा कि उनके बालों का रंग कहाँ गया। नानी बोलीं कि पहले उनके बाल भी काले थे। फिर उनके बालों का रंग तोसिया के बालों में चला आया।

